2024

HINDI

(Modern Indian Language)

Paper : HIN–CC–4016

(हिन्दी कथा साहित्य)

Full Marks : 80

Time : 3 hours

The figures in the margin indicate full marks for the questions

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पूर्ण वाक्य में दीजिए : 1×10=10

(क) 'निर्मला' उपन्यास का प्रकाशन किस वर्ष हुआ था?

(ख) हिन्दी साहित्य का उपन्यास-सम्राट् किसे कहा जाता है?

(ग) निर्मला के पति का नाम क्या था?

(घ) कृष्णा कौन थी?

(ङ) 'जयदोल' कहानी के रचनाकार का नाम बताइए।

(च) कमलेश्वर द्वारा रचित पठित कहानी का नाम लिखिए।

(छ) बंगमहिला का असली नाम क्या है?

(ज) 'कजाकी' किस प्रकार की कहानी है?

(झ) कौशिक के किसी एक कहानी-संग्रह का नामोल्लेख कीजिए।

(ञ) सिरचन कौन था?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के अति संक्षिप्त उत्तर दीजिए : 2×5=10

(क) पठित उपन्यास के अलावा प्रेमचंद द्वारा रचित किन्हीं दो उपन्यासों के नाम लिखिए।

(ख) निर्मला की कोई दो चारित्रिक विशेषताएँ बताइए।

(ग) "बालकों का हृदय कितना कोमल होता है, इसका अनुमान दूसरा नहीं कर सकता।" प्रस्तुत कथन के अभिप्राय को स्पष्ट कीजिए।

(घ) कहानीकार फणीश्वरनाथ 'रेणु' की भाषा-शैली की कोई दो विशेषताएँ बताइए।

(ङ) 'जयदोल' कहानी का उद्देश्य क्या है?

3. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **चार** के संक्षिप्त उत्तर दीजिए : 5×4=20

(क) उपन्यास और कहानी में निहित अंतरों को स्पष्ट कीजिए।

(ख) "गहने ही स्त्री की सम्पत्ति होते हैं। पति की और किसी सम्पत्ति पर उसका अधिकार नहीं होता। इन्हीं का उसे बल और गौरव होता है।" संदर्भ स्पष्ट कीजिए।

(ग) मंसाराम की चारित्रिक विशेषताओं पर एक टिप्पणी लिखिए।

(घ) 'कजाकी' कहानी में चित्रित बाल मनोविज्ञान पर एक टिप्पणी लिखिए।

(ङ) 'ठेस' कहानी के केन्द्रीय भाव पर प्रकाश डालिए।

(च) जयमती की चारित्रिक विशेषताओं को रेखांकित कीजिए।

4. निम्नलिखित प्रश्नों के सम्यक् उत्तर दीजिए : 10×4=40

(क) कथानक एवं उद्देश्य की दृष्टि से 'निर्मला' उपन्यास की समीक्षा कीजिए।

अथवा

'निर्मला' उपन्यास के आधार पर दहेज की समस्या का विवेचन कीजिए।

(ख) कथ्य की दृष्टि से 'जयदोल' **अथवा** 'दुलाईवाली' की समीक्षा कीजिए।

(ग) 'ताई' कहानी के आधार पर रामेश्वरी के चरित्र पर आलोकपात कीजिए।

अथवा

'आत्मा की आवाज' कहानी के प्रतिपाद्य पर प्रकाश डालिए।

(घ) निम्नलिखित अवतरण की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

मनुष्य का हृदय बड़ा ममत्व-प्रेमी है। कैसी ही उपयोगी और कितनी ही सुंदर वस्तु क्यों न हो, जब तक मनुष्य उसको पराई समझता है, तब तक उससे प्रेम नहीं करता। किन्तु भद्दी से भद्दी और बिल्कुल काम में न आने वाली वस्तु को भी यदि मनुष्य अपनी समझता है, तो उससे प्रेम करता है।

अथवा

बच्चे पहले जितना प्रेम करते हैं, बाद को उतने ही निष्ठुर भी हो जाते हैं। जिस खिलौने पर प्राण देते हैं, उसी को दो-चार दिन के बाद पटक कर फोड़ भी डालते हैं।

★★★